

फलों के वृक्षों पर लोरेन्थस (बांदा) की पहचान एवं उनका निदान

Identification and diagnosis of Loranthus on fruit trees

मनीष कुमार मौर्या, एच. के. सिंह एवं विकास कुमार यादव
Manish Kumar Maurya, HK Singh and Vikash Kumar Yadav

लेख के विषय में / Article info

प्राप्त हुआ / Received on : 05/07/2020
स्वीकार हुआ / Accepted on : 27/09/2020
प्रकाशित हुआ / Published on : 07/10/2020

परिचय / INTRODUCTION

लोरेन्थस फल के पेड़ों का अर्ध परजीवी है। इसको संस्कृति में 'वृक्षभक्ष' कहा गया है जिसका अर्थ है पेड़ों का भक्षक। लोरेन्थस को डेन्ड्रोपथी भी कहा जाता है। यह परजीवी भारत के विभिन्न जगहों पर पाया जाता है। यह प्रायः आम के पेड़ों को अधिक हानि पहुँचाता है। उत्तरी भारत में लगभग 60 से 70 प्रतिशत पुराने आम व अन्य फलों के पेड़ों को भारी क्षति पहुँचाता है। भारत के मध्य भाग में यह परजीवी सामान्यतः मधुका लेटिफोलिया (महुआ) पर ज्यादा आक्रमण करता है। यह अर्ध परजीवी आम, बेल, अनार, कटहल, अमरुद, कचनार, शीशम, सिरसा, जामुन, पीपल, सागौन, नीम, बरगद तथा अन्य कई प्राकृतिक बीजों के पौधों पर पाया जाता है।

लोरेन्थस की पहचान व प्रभाव

लोरेन्थस पेड़ के तने व शाखाओं का अर्ध-परजीवी है जो कि लोरेन्थेसी फैमिली से है। इसे पेड़ों की शाखाओं पर आसानी से देखकर पहचाना जा सकता है। जो कि चिकनी चौड़ी पत्तियों वाले घने छोटे टहनियों के समूह में रहते हैं। इसका फूल नारंगी रंग का होता है जिस पर लाल छोटे-छोटे फल भी दिखाई पड़ते हैं। डेन्ड्रोपथी फैलकेट भारत में इस परजीवी की सबसे सामान्य प्रजाति है। लोरेन्थस की पत्तियों में क्लोरोफिल होता है और वे अपने भोजन की आवश्यकता के

अनुसार कार्बोहाइड्रेट को संश्लेषित करते हैं। पौधों में परजीवी मिट्टी के स्तर से ऊपर स्थित वायवीय हिस्सों पर आक्रमण करते हैं यह परजीवी अपनी जड़ प्रणाली से वंचित होते हैं। ये परजीवी पानी व अन्य खनिज पोषक तत्वों के लिए पेड़ों पर निर्भर रहते हैं। लगातार जब परजीवी पौधों के आक्रमित तनों से खनिज पदार्थ व पोषक तत्व ग्रहण करते हैं तो पौधे की तने कमजोर हो जाती है।

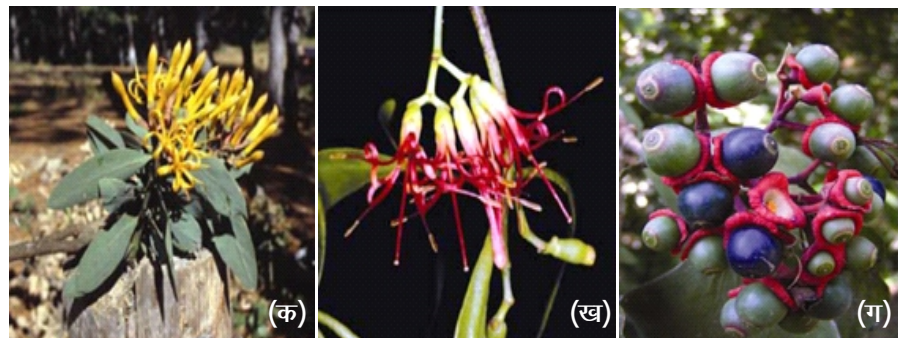
डेन्ड्रोपथी फैलकेट मजबूत, शाखित, अरोमिल झाड़ी वाला पौधा होता है। इसका तना मोटा, सीधा अथवा पर्वो पर चपटा होता है। और आक्रमण के स्थान से गुच्छों में निकलता प्रतीत होता है। जिस स्थान पर यह परपोषी के भीतर चूषकांग भेजता है, वह स्थान कुछ फूलकर गुलमों जैसी रचना बना लेता है। कभी-कभी यह परपोषी के एक स्थान पर आक्रमण करने के बजाय, एक विसर्पी शाखा बनाता है। जो परपोषी स्तंभ के चारों ओर लिपट कर बढ़ती है और इससे स्थान-स्थान पर चूषकांग निकलकर परपोषी के भीतर घुस जाते हैं। इसके पुष्प गुच्छों में बनते हैं और लम्बे नालिकाकार, हरित सफेद अथवा कुछ जातियों में लाल रंग के होते हैं। फल मीठे, मांसल और एकल बीज वाले होते हैं जो पक्षियों एवं जन्तुओं द्वारा खा लिए जाते हैं।

सारांश / Abstract

लोरेन्थस पेड़ों का अर्ध परजीवी है। इस परजीवी की अत्यधिक पुनर्योजी पेड़ों की क्षमता प्रचलित प्रबंधन रणनीतियों में बाधा डालती है। उत्तरी भारत में लगभग 60 से 70 प्रतिशत पुराने आम व अन्य फलों के पेड़ों को भारी क्षति पहुँचाता है। आम और अनेक पेड़ पर लोरेन्थस का विभिन्न यांत्रिक और रासायनिक द्वारा नियंत्रण किया जाता है। 2,4-डी का बेस बैंडिंग एवं जाइलम में स्थानांतरण से अर्ध परजीवी का रोकथाम होता है। 1 प्रतिशत एथेफॉन या 60 प्रतिशत डीजल का दो लगातार स्प्रे भी परजीवी को नियंत्रित करता है।

मुख्य शब्द / Key Words

लोरेन्थस, फल वृक्ष, प्रजातियाँ
Loranthus, fruit trees, Varieties



चित्र 1: लोरेन्थस की पहचान

स्रोत: निकेन्त व शॉ, 2008

पादप रोग विज्ञान विभाग, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या (उ०प्र०)- 224229
*Corresponding author Email : hksndu@gmail.com

- क. समूहों में व्यवस्थित रंगीन फूल जो बड़ी मात्रा में चीनी युक्त अमृत पैदा करता है जो परागण करने वाले पक्षियों को आकर्षित करते हैं,
ख. एमीमा मिकेली के चमकीले लाल फूल:
ग. सामान्य मिस्टलेटो एवं सिट्टाकैन्थस कुकुलेरिस के चमकीले नीले फल जो अपने बीजों को फैलाने वाले पक्षियों को आकर्षित करता है।

तालिका 2: लोरेन्थस (मिस्टलेटो) के रोगजनक जनन एवं गंभीर रूप से प्रभावित समूह

जनन	प्रभावित मेजबान	क्षेत्र
लोरन्थेसी	सफेदा, एकेसिया	आस्ट्रेलिया
अम्येमा	नींबू	कैरीबियन
डेन्ड्रोपेमोम	नींबू, अंजीर, अमरुद	भारत
डेन्ड्रोथोय	नींबू	भारत
मैक्रोसोलेन	कोकोआ	मध्य अमेरिका
ओरिकटैन्थस	नींबू, आम, कॉफी, एवोकाडो, रबर, कोकोआ	मध्य और दक्षिण अमेरिका
पथीरुसा	पाइन, नींबू	मैक्सिको और मध्य अमेरिका
सिट्टाकैन्थस	नींबू	फिलिपिन्स, इंडोनेशिया
स्व्यूरुला	नींबू, आम, पाइन	मध्य अमेरिका
स्ट्रुथैन्थस	कोकोआ	अफ्रीका
टेपिनैन्थस	नींबू	भारत
विसकेसी	अनानास	उत्तर अमेरिका एवं एशिया
एक्र्यूथोबियम	रबर, आम, एवोकाडो, कोकोआ	दक्षिण अमेरिका
डेन्ड्रोथोरा	सफेदा, एकेसिया	आस्ट्रेलिया, हवाई
कारथलसेला	नींबू, कॉफी, एवोकाडो, कोकोआ,	उत्तर, मध्य व दक्षिण अमेरिका
फोराडेन्ड्रॉन	अखरोट, माजूफल	
	बदाम, सेब, अंजीर, नाशपाती,	एशिया, यूरोप एवं अफ्रीका
विस्कम	आड़ू, रबर, अखरोट	



बांदा (अर्ध परजीवी) से ग्रसित आम का वृक्ष



चित्र 2: अर्ध परजीवी द्वारा ग्रसित बेल का

स्रोत: निक्रेन्त व शॉ, 2008



चित्र 3: अर्ध परजीवी द्वारा ग्रसित सागौन, सिरसा एवं अन्य पौधे

परजीवी का फैलाव

परजीवी का एक स्थान से दूसरे स्थान तक फैलाव प्रायः पक्षियों द्वारा बीज से होता है। पक्षी फलों के सुनहरे रंग के कारण आकर्षित होते हैं। इन फलों के गूदे चिपचिपे होते हैं और इस प्रकार बीज आसानी से पक्षियों द्वारा फैल जाता है। जब यह बीज पेड़ों के तनों और शाखाओं के बीच में गिरता है और उचित नमी में वे अंकुरित होते हैं। पक्षी का उत्सर्जन भी परजीवी के बीजों के प्रसार में मदद करता है।

रोकथाम

- इन परजीवी की रोकथाम का सबसे अच्छा उपाय यह है कि बीज को बनने से पहले ही परजीवी पौधे को नष्ट कर देना चाहिए।
- बांदा की रोकथाम के लिए 1 प्रतिशत

- एथेफॉन या 60 प्रतिशत डीजल का स्प्रे लाभदायक सिद्ध हुआ है।
- पायस की मात्रा नींबू, नारंगी एवं अमरुद के लिए गर्मियों के दिनों में 30 प्रतिशत एवं सर्दियों के दिनों में 25 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए, अन्यथा पोषक को हानि पहुँचने की संभावना होती है।
- जिन शाखाओं व टहनियों पर परजीवी दिखाई दें उसको लगाव बिंदु से 2.5 सेमी0 नीचे से काट देना चाहिए।
- पोषक की प्रभावित शाखाओं पर कॉपर सल्फेट एवं 2.4 डी के इंजेक्शन भी लाभदायक होते हैं।

निष्कर्ष / Conclusions

यह अर्ध परजीवी बड़े पेड़ों को अधिक क्षति पहुँचाता है। सामान्यतः यह परजीवी उत्तरी भारत में आम, बेल, सागौन इत्यादि के

पौधों को लगभग 60 से 70 प्रतिशत तक ग्रसित करता है। अधिक प्रकोप होने पर पेड़ सूख भी जाते हैं। इनके फलों के सुनहरे रंग होने के कारण चिड़िया उस पर बैठती है और उनके फल को खाती है। उनके फूल चिपचिपे होते हैं जिससे परजीवी के बीज उनके पैरों पर चिपक जाते हैं और दूसरे पौधों पर फैलाते हैं। इसके लिए यांत्रिक और रासायनिक उपाय हैं जैसे बीज को बनने से पहले ही परजीवी पौधे को नष्ट कर देना, 1 प्रतिशत एथेफॉन या 60 प्रतिशत डीजल का स्प्रे, प्रभावित शाखाओं पर कॉपर सल्फेट एवं 2.4 डी के इंजेक्शन प्रभावित पाए गए हैं। लगाव बिंदु से 2.5 सेमी0 या जहाँ तक उसके चूषकांग पाए जाए उससे 5 से 6 सेमी नीचे से काटना भी पेड़ों को परजीवी से बचाता है।

संदर्भ सूची / REFERENCES

मैथीव, डी. एवं हबीबुर्रहमान, पी.वी. (2013). बेस बैंडिंग टेक्नीक फॉर द मैनेजमेंट व मिस्टलेटो (लोरेन्थस फैल्केटस एल.एफ. एवं एल. उटुइ मोलीना) फ्रॉम पेरिनियल फ्रूट ट्रीज। आरच. फाइटोपैथ प्ल. प्रोटोक. 46(1): 29-38.
निक्रेन्त, डी.एल. एवं हॉ, डी.सी. (2008). मिस्टलेटो: पैथोलॉजी, सिस्टमेटिक्स,

इकोलॉजी एंड मैनेजमेंट। प्लांट डिजीज, 92(7): 988-1006.
सिंह, आर. एस. (2009). प्लांट डिजीज. ऑक्सफोर्ड एंड आइबीएच पब्लिशिंग को. प्राइ. लिमि., नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या 623.
सिंह, बी.पी. (1993). पादप रोग विज्ञान। रामा पब्लिशिंग हाउस, बड़ौत, मेरठ। पृष्ठ संख्या 420-422

उद्धरण / Citation:

मौर्या मनीष कुमार, सिंह एच के एवं यादव विकास कुमार. 2020. फलों के वृक्षों पर लोरेन्थस (बांदा) की पहचान एवं उनका निदान। कृषि मञ्जूषा 3 (1): 40-42
Maurya MK, Singh HK and Yadav VK. 2020. Identification and diagnosis of Loranthus on fruit trees. *Krishi Manjusha* 3(1): 40-42